पाठ-2

आत्मविश्वास

आइए सीखें : ● आत्मविश्वास की भावना का विकास ● प्रत्यय और उपसर्ग ● विलोम शब्द, हिन्दी के मानक शब्द ● मुहावरे ● समास विग्रह ● अपठित गद्यांश पढ़कर समझना।

(पाठ परिचय : *जीवन में सफलता प्राप्त करने का एक शक्तिशाली मंत्र है - आत्मविश्वास। हमें अपने जीवन में पग-पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस जीवन-संग्राम में वही सफल होता है, जिसे अपनी शक्ति और अपने प्रयासों पर विश्वास होता है। प्रस्तुत निबंध में निबंधकार ने इतिहास से अनेक उदाहरण देते हुए इसी सत्य को सिद्ध किया है।)*

''बाली से कौन लड़ सकता है? महाराज!'' - ''क्यों, ऐसी उसमें क्या बात है?''

''महाराज ! उसे ऐसा वरदान प्राप्त है कि जो उसके सामने आता है, उसकी आधी ताकत उसमें आ जाती है और वह उसे आसानी से पछाड़ देता है।''

सुग्रीव ने राम से अपने भाई बाली के संबंध में यह बात कही थी। दूसरे की, सामने वाले की आधी ताकत अपने में खींचने की शक्ति का जो वरदान बाली को प्राप्त था, वह हम सबको भी प्राप्त है। विडम्बना यह है कि हमने कभी उसका उपयोग नहीं किया। इसलिए विरोधी हमें पीटते रहे हैं और हम उस पीटने को अनिवार्य समझकर पिटते रहे हैं।

सच बात यह है कि जब कोई विरोधी हमारे सामने आता है, तो हम अपनी आत्महीनता से, कायरता से, कुसंस्कार से, आत्मविश्वास की कमी से, विरोधी का और अपना बल तौले बिना ही उसे अपने से

शिक्षण-संकेत - ■ शुद्ध उच्चारण का ध्यान रखते हुए पाठ का पठन-पाठन करें-कराएँ। ■ विद्यार्थियों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। 'स', श, च्छ, क्ष; 'श्र' आदि वर्णों के उच्चारण के लिए पर्याप्त अवसर प्रत्येक विद्यार्थी को दें।

शक्तिशाली मान लेते हैं। बस, यही मानना हमारी शक्ति को आधी कर देता है और हम से ही वह आधी शक्ति हमारे विरोधी को प्राप्त हो जाती है और इस अर्थ में हम उससे आधे रह जाते हैं। हममें आत्मविश्वास हो तो उससे हम विरोधी को आत्महीन कर सकते हैं, उसकी आधी शक्ति अपने में ले सकते हैं।

आत्मविश्वास की सबसे बड़ी दुश्मन है दुविधा। दुविधा एकाग्रता को नष्ट कर देती है। आदमी की शक्ति को बाँट देती है। आधा इधर और आधा उधर। बस इस तरह आदमी खंडित हो जाता है।

मेरे एक मित्र अपनी पत्नी के साथ जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठे बातें कर रहे थे। बात करते-करते पत्नी सो गई। वे उपन्यास पढ़ने लगे। अचानक उन्हें लगा कि सामने से भेड़िया चला आ रहा है- उन्हीं की तरफ़। भेड़िया- एक खूँखार जानवर। ये सोचकर वे इतने घबरा गए कि पत्नी को सोता छोड़कर ही भाग खड़े हुए। भाग्य से कुछ दूर ही उन्हें एक बंदूकधारी सज्जन मिल गए। वे उनके पैरों पर गिर पड़े। 'मेरी पत्नी को बचाइए, भेड़िया उसे खा जाएगा। वे गिड़गिड़ाए।

शिकारी दौड़ा-दौड़ा उनके साथ पेड़ के पास आया, तो उनकी पत्नी यथापूर्व सो रही थी और भेड़िया उसके पास रखी टोकरी में मुँह डाले पूरियाँ खा रहा था।

''कहाँ है भेड़िया?'' शिकारी ने बंदूक साधते हुए पूछा। वे काँपते हुए बोले, ''वह है तो सामने।''

शिकारी बहुत जोर-से हँस पड़ा, ''भले मानस! वह तो बेचारा कुत्ता है।'' क्या बात हुई यह कि भय ने उन्हें आत्मविश्वासहीन कर दिया।

कृष्ण ने महाभारत में सर्वोत्तम काम यही तो किया कि पाण्डवों को उन्होंने आत्मविश्वास से भर दिया। वे अपने कार्य के महत्व को समझते थे। तभी तो पूरे आत्मविश्वास के साथ उन्होंने अर्जुन को कहा था, 'संशय मत कर। परेशान मत हो, युद्ध कर। तू निश्चित रूप से युद्ध में अपने शत्रुओं पर विजय पाएगा।'

नेता जी सुभाषचंद्र बोस जब आई.सी.एस की प्रतियोगिता में बैठे तो अंग्रेज परीक्षक ने पूरी तेज़ी से घूमते हुए बिजली के पंखे की ओर इशारा कर उनसे पूछा, ''क्या इसकी पंखुड़ियाँ गिनी जा सकती हैं?'' सुभाष बाबू ने झट से पंखा बंद कर दिया और बोले, ''जी हाँ, सुगमता के साथ।''

परीक्षक प्रसन्न हो गया, परन्तु उसने उन्हें एक बार और कसौटी पर कसा। उसने अपनी अँगूठी उनके पास रखकर पूछा, ''क्या इसमें से सुभाषचंद्र बोस पास हो सकता है?'' सुभाष बाबू ने अपने नाम का विज़िटिंग कार्ड मोड़कर उसमें से पास करते हुए कहा, ''जी, इस तरह!'' यह है अटूट आत्मविश्वास। इसके अभाव में यदि वे घबरा जाते और ऊटपटाँग जवाब देते तो फ़ेल हो जाते।

दूसरे हमारी क्षमता पर विश्वास करें और हमारी सफलता को निश्चित मानें, इसके लिए आवश्यक शर्त यही है कि हमारा अपनी क्षमता और सफलता में अखण्ड विश्वास हो। हमारे भीतर उगा भय, शंका और अधैर्य ऐसे डायनामाइट हैं, जो हमारे प्रति दूसरों के विश्वास को खण्डित कर देते हैं।

हमारे विद्यालय में, जो नगर से दूर जंगल में था, चौदह वर्ष का एक बालक अपने घर से अकेला पढ़ने आया करता था। कुछ महीने बाद दूसरा बालक भी उसके साथ आने लगा। वह दूसरा बालक डरपोक था। वह भूतों और चोरों की कहानियाँ उसे सुनाया करता। इसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि पहला बालक भी डरपोक हो गया और वे दोनों प्रतीक्षा करते रहते कि मैं चलूँ तो वे भी मेरे साथ चलें।

सूत्र यह बताता है-''हतोत्साहियों, निराशावादियों, डरपोकों और सदा असफलता का ही मर्सिया पढ़ने वालों के सम्पर्क से दूर रहो।'' नीति का वचन है कि जहाँ अपनी, अपने कुल की और अपने देश की निंदा हो और उसका मुँह तोड़ उत्तर देना सम्भव न हो, तो वहाँ से

उठ जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि इसमें आत्मगौरव और आत्मविश्वास की भावना खण्डित होने का भय रहता है।

अनुभव वाणी है, ''मनुष्य के जीवन के लिए इससे अच्छी और कोई बात नहीं है कि वह सदा महानता अनुभव करता रहे कि मेरे लिए सब कुछ अच्छा ही होगा। जो भी कार्य मैं हाथ में लूँगा, उसमें मुझे सफलता अवश्य मिलेगी।''

बहुत से मनुष्य यह सोच-सोचकर कि हमें कभी सफलता नहीं मिलेगी, देव हमारे विपरीत है, अपनी सफलता को अपने ही हाथों पीछे धकेल देते हैं। उनका मानसिक भाव सफलता और विजय के अनुकूल बनता ही नहीं, तो सफलता और विजय कहाँ? यदि हमारा मन शंका और निराशा से भरा है तो हमारे कामों का परिचय भी निराशाजनक ही होगा, क्योंकि सफलता की, विजय की, उन्नति की कुंजी तो अविचल श्रद्धा ही है।

क्या मैं अभागा हूँ ? क्या मैं भाग्यवान हूँ ?

इन प्रश्नों का सही उत्तर जानने के लिए किसी ज्योतिषी से पूछने की आवश्यकता नहीं। इसके लिए तो आप अपने से ही पूछिए कि आप अपने को अभागा अनुभव करते हैं या भाग्यवान? अभागा अनुभव करते हैं तो कोई आपको भाग्यवान नहीं बना सकता और भाग्यवान अनुभव करते हैं, तो कोई अभागा नहीं बना सकता।

अपने मन को सफलता, विजय, सौभाग्य और श्रेष्ठता के विचारों और भावनाओं से सदा भरपूर रखिए और सफलता, विजय, सौभाग्य और श्रेष्ठता की ओर आगे बढ़ते रहिए।

जीवन में उतार भी हैं और चढ़ाव भी। जो लोग हमेशा उतार की ही बात सोचते हैं, वे उन लोगों की तरह हैं जो कूड़ाघरों के पास कुरसी बिछाकर बैठ जाते हैं और शहर की गंदगी को गाली देते हैं।

जन्म से ही अंधी-बहरी, पर विचारक और लेखिका के रूप में विश्वविख्यात 'हेलेन केलर' की यह सूक्ति सदा याद रखिए, **''सुख का एक द्वार बंद होने पर तुरंत दूसरा खुल जाता है लेकिन कई बार हम उस बंद द्वार की ओर इतनी तल्लीनता से ताकते रहते हैं कि हमारे लिए जो द्वार खोल दिया गया है, हम उसे देख नहीं पाते।''**

युद्ध में वे विजयी नहीं होते, जो खंदक-खाइयों को ताकते-झाँकते हैं। विजयमाला पड़ती है उनके गले, जो अपनी संपूर्ण शक्ति को तौलकर छलाँग लगाते हैं, खतरों से खेलते हैं। जीवन के इस अनुभव को कभी मत भूलिए -

जो हड़बड़ा के रह गया वो रह गया इधर।

जिसने लगाई एड़ वो खंदक के पार था। - **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**

लेखक-परिचय : कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के देवबंद नगर में सन् 1906 में हुआ था। स्वतंत्रता-आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण उन्हें अनेक बार कारावास का दण्ड भोगना पड़ा। प्रभाकर जी एक ख्याति प्राप्त पत्रकार थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में आपने सराहनीय कार्य किया। 'ज्ञानोदय', 'नया जीवन', 'विकास' जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन करके आपने पत्रकारिता को काफी ऊँचाई प्रदान की। साहित्य के क्षेत्र में आपने रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध और रिपोर्ताज आदि विधाओं पर अपनी कलम का प्रभाव दिखाया। 'जिंदगी मुस्कराई' 'माटी हो गई फूल', 'आकाश के तारे', 'धरती के फूल', 'दीप जले, शंख बजे', आदि आपकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

अभ्यास

बोध प्रश्न :

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए।

दुर्भाग्य	----------	सुगमता	----------
आत्महीनता	----------	दुविधा	----------
एकाग्रता	----------	यथापूर्व	----------
क्षमता	----------	अविचल	----------
विश्वविख्यात	----------	सूक्ति	----------
तल्लीनता	----------	अखण्ड	----------
अभंग	----------	मर्सिया	----------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

क बाली को क्या वरदान प्राप्त था ?

ख राम बाली के सामने आकर क्यों नहीं लड़े ?

ग कृष्ण ने महाभारत में सर्वोत्तम काम क्या किया ?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए-

क सामने वाले की आधी ताकत अपने में खींच लेने की शक्ति हम सबमें है? कैसे?

ख लेखक ने **हेलन केलर** का उदाहरण देकर हमें क्या समझाना चाहा है ?

ग ''आत्मविश्वास के बूते पर जीवन में सब कुछ करना संभव है।'' किसी एक महापुरुष का उदाहरण देते हुए उक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 4. नीचे लिखे गद्यांशों की प्रसंग देते हुए व्याख्या कीजिए-

क जो लोग हमेशा उतार की ही बात सोचते हैं, वे उन लोगों की तरह हैं जो कूड़ाघरों के पास कुरसी बिछाकर बैठ जाते हैं और शहर की गंदगी को गाली देते हैं।

ख जब कोई विरोधी हमारे सामने आता है तो हम अपनी आत्महीनता से, कायरता से, कुसंस्कार से, आत्मविश्वास की कमी से विरोधी का और अपना बल तौले बिना ही उसे अपने से शक्तिशाली मान लेते हैं।

प्रश्न 5 निम्नलिखित वाक्यों का भाव स्पष्ट कीजिए -

क सफलता की, विजय की, उन्नति की, कुंजी अविचल श्रद्धा ही है।

ख हम अपनी सोच के कारण ही सफल, असफल होते हैं।

ग हममें आत्मविश्वास हो तो इससे हम विरोधी को आत्महीन कर सकते हैं।

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए -

दुर्भाग्य, शक्तिशाली, आत्महीन, सर्वोत्तम, निश्चित, हतोत्साहियों

प्रश्न 2. 'जीवन में उतार भी हैं और चढ़ाव भी' - इस वाक्य में 'उतार' और 'चढ़ाव' परस्पर विलोम शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इसी प्रकार एक ही वाक्य में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग कीजिए -

भला-बुरा, दाता-याचक, सपूत-कपूत, निश्चित-अनिश्चित, भाग्यवान-भाग्यहीन, पाप-पुण्य, सुख-दुख।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के स्थान पर हिन्दी मानक शब्द लिखिए -

ताकत, विजिटिंग कार्ड, इशारा, मर्सिया।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय और उपसर्ग पहचान करके अलग-अलग कीजिए-

तल्लीन, दुर्भाग्य, शक्तिशाली, कायरता, एकाग्रता, खण्डित, अभागा।

प्रश्न 5. निम्नलिखित सामासिक पदों का समास विग्रह करते हुए उनमें निहित समास पहचानकर लिखिए-

आत्मविश्वास, कूड़ाघर, खन्दक-खाइयों, शक्तिहीन, यथापूर्व, विश्वविख्यात।

प्रश्न 6. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

काँच के एक विशाल महल में एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। इस महल में वह जिधर भी देखता, उधर ही उसे कुत्ते दिखाई देते थे। उसने इन कुत्तों को देखकर सोचा कि ये सभी कुत्ते उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी शान दिखाने के लिए जब उसने भौंकना शुरु किया तब उसे चारों ओर कुत्ते भौंकते सुनाई दिए। उसका दिल धड़कने लगा और वह बुरी तरह घबरा गया। वह उन कुत्तों पर झपटा। तब उसने देखा कि वे कुत्ते भी उस पर झपट रहे हैं। वह जोर-जोर, से भौंका, कूदा किन्तु शीघ्र ही बेहोश होकर गिर पड़ा।

क. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

ख. इस गद्यांश में प्रयुक्त मुहावरा छाँटिए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

ग. महल में कुत्ते को अपने चारों ओर कुत्ते क्यों दिखाई दे रहे थे ?

घ. कुत्ते ने भौंकना क्यों शुरू किया ?

ङ उपर्युक्त गद्यांश में से साधारण वाक्य, मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य छाँटकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. 'सुख का एक द्वार बन्द होने पर तुरंत दूसरा द्वार खुल जाता है।' इस कथन के संबंध में कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. आपके जीवन में जो उतार-चढ़ाव आए हैं, उन्हें संक्षेप में लिखिए।
3. आत्मविश्वास से संबंधित कोई कहानी/घटना कक्षा में सुनाइए।
4. शिक्षक की सहायता से ऐसे महान व्यक्तियों की सूची तैयार कीजिए, जिन्होंने आत्मविश्वास के बल पर सफलता प्राप्त की हो।